इंडिया सोशल फोरम 2023

आंदोलनों और जन संगठनों से अपील

1. परिचय

विश्व सामाजिक मंच (डब्ल्यू.एस.एफ) की शुरुआत दो दशक से भी अधिक समय पहले दुनिया के सामाजिक आंदोलनों, ट्रेड यूनियनों और नागरिक समाज संगठनों के एक खुले मंच के रूप में हुई थी। पहला अधिवेशन डब्ल्यू.एस.एफ ब्राजील में आयोजित किया गया था। जब दुनिया पूंजीवाद और नई उदार आर्थिक नीतियों के सबसे बुरे प्रभाव को देख रही थी, डब्ल्यू.एस.एफ ने आवाज़ उठाई कि ''एक और दुनिया संभव है'' (ऐनदर *वर्ल्ड इज़ पॉसिबल*)। यह दूसरी दुनिया लोकतन्त्र, स्वतंत्रता, समानता, बंधुता और न्याय के मूल्यों पर आधारित हो सकती है। तब से डब्ल्यू.एस.एफ की प्रक्रिया विश्व स्तर पर अलग-अलग वर्षों में अलग-अलग तरीके से जारी रही है।

इंडिया सोशल फोरम 2023 (आई.एस.एफ 2023) का आयोजन फरवरी 2024 में काठमांडू-नेपाल में आगामी वर्ल्ड सोशल फोरम (डब्लू.एस.एफ) के आयोजन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। आई.एस.एफ 2023 का लक्ष्य पूरे भारत में राज्य-स्तरीय और ज़मीनी स्तर के संगठनों और लोगों के आंदोलनों को एक साथ लाना है, जो नागरिक और राजनीतिक अधिकारों, सामाजिक-आर्थिक अधिकारों और दलितों, आदिवासियों, महिलाओं, किसानों, श्रमिकों और अल्पसंख्यकों के अधिकारों के सवालों पर ज़ारी सामाजिक आंदोलनों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। इसका लक्ष्य ट्रेड यूनियनों, किसान यूनियनों, अनौपचारिक श्रमिक संघों और अन्य संबंधित हितधारकों की भागीदारी को भी मजबूत करना है।

2. प्रसंग

हम खुद को एक ऐसी दुनिया में पाते हैं जहां सत्तारूढ़ सरकारों का नवउदारवादी शासन के तार्किक विस्तार के रूप में देखा जा सकता है। ऐसे परिप्रेक्ष्य के अंतर्गत सवालों को लेकर ''विश्व सामाजिक मंच'' की शुरुआत हुई।

यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि भारत समेत विश्व स्तर परअमन, न्याय और लोकतान्त्रिक मूल्यों पर लगातार प्रहार हो रहा है। बड़े पैमाने पर गरीब, सामाजिक और मानवाधिकार कार्यकर्ता जेलों में बंद हैं। बहुमत का दुरुपयोग करते हुये सत्तारूढ़ सरकारों द्वारा किसान-मजदूर-महिला और जन-विरोधी कानून नागरिकों पर थोपे जा रहे हैं। सांप्रदायिक और नस्लवादी नफरत बढ़ रही है, सरकारों की जनविरोधी कॉर्पोरेट-परस्त नीतियों के कारण प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर समुदायों की आजीविका खतरे में हैं, किसान-किसानी और गाँव को सुनियोजित तौर पर नष्ट करने का षड्यंत्र जारी है और पूरी दुनिया में जलवायु परिवर्तन अधिकांश भौगोलिक क्षेत्रों और लोगों पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहा है।

कॉर्पोरेट लोकतांत्रिक व्यवस्था के अधिकांश स्तंभों को नियंत्रित कर रहे हैं और लोकतंत्र को कमजोर कर रहे हैं। असमानताएँ बेशर्मी के स्तर तक बढ़ गई हैं। भारतीय परिदृश्य में, जी.एस.टी., नोटबंदी और लॉकडाउन ने स्थानीय व्यवसायों और आजीविका को और अधिक हाशिए पर डाल दिया है।

हम बहुसंख्यकवाद और आक्रामक राष्ट्रवाद में वैश्विक वृद्धि भी देख रहे हैं। भारत भी इसका गवाह है। एक दक्षिण एशियाई देश के रूप में भारत भी क्षेत्रीय स्तर पर इन तमाम समस्याओं और चुनौतियों को साझा करता है, जिनमें श्रमिकों और गरीब लोगों के प्रवास से लेकर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव तक शामिल हैं।

यह संवैधानिकअधिकारों, राजनीतिक-सामाजिक-आर्थिक वातावरण पर नकारात्मक प्रभाव डाल रहा है। संवैधानिक संस्थाओं को कौड़ियों के दाम पर पूँजीपतियों को सौंपा जा रहा है। रोजगार और महंगाई के सवाल आज सबसे बड़ी चुनौतियों के रूप में सामने हैं। भारत के संसदीय लोकतन्त्र और कल्याणकारी ढांचे को पुलिसिया दमनात्मक राज्य बनाने की कोशिश की जा रही है। संविधान बदलने की कोशिशें जारी हैं। श्रम क़ानूनों से लेकर पर्यावरण, संसाधनों, शिक्षा, निजता से संबन्धित नीतियों-क़ानूनों में बिना परस्पर और पर्याप्त मशविरे के नए संशोधन और कानून लाये जा रहे हैं, जो संघीय चरित्र और जन-हितों के प्रतिकूल केंद्रवाद और कॉर्पोरेट हितों को सुनिश्चित करते हैं।

इस पृष्ठभूमि में सामाजिक मंचों के आयोजन के भारत के अनुभवों का लाभ उठाना महत्वपूर्ण हो जाता है। साझा सहयोग को मजबूत करते हुये, आई.एस.एफ 2023 का उद्देश्य नागरिक और राजनीतिक अधिकारों के क्षरण, सामाजिक-आर्थिक असमानताओं और उत्पीड़ित समुदायों के लगातार हाशिए पर जाने को संबोधित करना है और, वैकल्पिक विकास की नीतियों की आवश्यकता पर साझा समझ भी विकसित करना है।

3. विरासत का निर्माण

आई.एस.एफ 2023 क्रमशः 2003, 2004 और 2006 में क्षेत्रीय, विश्व और राष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक मंच के आयोजन की भारत की समृद्ध विरासत से प्रेरणा लेता है। यह विरासत लोकतांत्रिक मूल्यों, सामाजिक न्याय और समावेशिता के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को स्पष्ट करती

है। आई एस एफ 2023 पिछले मंचों के आयोजनों से निकले सामूहिक समझ और ऊर्जा को समता और न्याय परक समाज की ओर आगे ले जाने की अगली कड़ी है जो संवाद, सहयोग और सामूहिक कार्रवाई के लिए एक लोकतांत्रिक और समावेशी समाज को बढ़ावा देने की हमारी प्रतिबद्धता को रेखांकित करते हैं।

2004 में मुंबई में आयोजित वैश्विक सामाजिक फोरम आंदोलन में भारत की मजबूत सहभागिता एक महत्वपूर्ण पड़ाव है, जिसमें तमाम संगठनों, कार्यकर्ताओं और संबंधित नागरिकों की भागेदारी ने महत्वपूर्ण सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक मुद्दों को संबोधित किया। मंच ने खुली चर्चाओं, कार्यशालाओं, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और विरोध प्रदर्शनों के लिए साझा अवसर देने का काम किया, जिससे बौद्धिक आदान-प्रदान और सामूहिक लामबंदी का माहौल तैयार हुआ।

मुंबई सोशल फोरम में वैश्वीकरण, कॉर्पोरेट शक्ति, लैंगिक न्याय जैसे विषयों को संबोधित करने वाले संगठन, पर्यावरणीय चुनौतियाँ और हाशिए पर रहने वाले समुदायों के अधिकार से जुड़े विभिन्न सामाजिक आंदोलनों और नागरिक समाज का समागम देखा गया। प्रतिभागियों को समता, बंधुता और न्याय के मूल्यों पर आधारित दुनिया की सामूहिक उम्मीद के साथ उनके अपने अनुभव, रणनीतियों और संघर्षों को साझा करने का एक अवसर प्रदान किया।

मुंबई सोशल फोरम की सफलता से प्रेरित होकर, भारत ने 2006 में इंडिया सोशल फोरम का आयोजन करके एक और महत्वपूर्ण कदम लिया। यह राष्ट्रीय अधिवेशन मुंबई में पैदा हुई ऊर्जा का अगला पड़ाव था और इसका उद्देश्य पूरे देश में सामाजिक-आर्थिक न्याय आंदोलनों को और मजबूत करना था। इसमें अन्य लोगों के अलावा जन-संगठनों, गैर सरकारी संगठनों, ट्रेड यूनियनों, महिला समूहों, पर्यावरण कार्यकर्ताओं और छात्र संगठनों की एक व्यापक भागीदारी हुई।

इंडिया सोशल फोरम ने भारत में विविध सामाजिक आंदोलनों के बीच संवाद, सहयोग और एकजुटता के निर्माण के लिए एक मंच के रूप में कार्य किया। इसने हाशिये पर पड़े समुदायों की आवाज को बुलंद करने और समाज में प्रचलित संरचनात्मक असमानताओं को दूर करने का प्रयास किया। कार्यशालाओं, सेमिनारों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और नेटवर्किंग सत्रों के माध्यम से मंच ने महत्वपूर्ण सामाजिक-राजनीतिक चुनौतियों से निपटने के लिए विचारों, रणनीतियों और अनुभवों की साझा समझ विकसित करने और आपसी एकजुटता बनाने का अवसर दिया। 2006 में इंडिया सोशल फोरम ने भूमि अधिकार, संसाधनों तक पहुंच जैसे प्रमुख मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया।

सांप्रदायिक सद्भाव, जाति-आधारित भेदभाव, श्रमिकों के अधिकार, महिला सशक्तिकरण, और पर्यावरण जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर विभिन्न आंदोलनों और संगठनों के बीच सीखने और सहयोग के लिये बातचीत की जगह बनाई व पारस्परिक संबंधों को बढ़ावा दिया।

2004 में मुंबई सोशल फोरम और 2006 में इंडिया सोशल फोरम से मिली सफलताएँ और सबक 2023 में आगामी इंडिया सोशल फोरम के लिए एक महत्वपूर्ण आधार हैं। हम सामूहिक कार्रवाई की ताकत और सामाजिक मंचों की विविधता को संगठित और एकजुट करने की क्षमता को पहचानते हैं। हमारा लक्ष्य वर्तमान संदर्भ में सत्तावादी शासन और नवउदारवादी ताकतों द्वारा उत्पन्न चुनौतियों का सामना करने के लिए सक्रियता और एकजुटता की भावना को फिर से जागृत करना है। इंडिया सोशल फोरम 2023 न्याय, समानता, लोकतन्त्र, धर्मनिरपेक्षता और बंधुता की ओर समावेशिक संवाद और सामूहिक कार्रवाई को बढ़ावा देते हुए इस समृद्ध परंपरा को जारी रखने का अगला कदम है।

4. उद्देश्य

आई.एस.एफ 2023 का पहला उद्देश्य एक ऐसा मंच बनाना है जो नागरिक समाज संगठनों, किसान संगठनों, ट्रेड यूनियनों और सामाजिक आंदोलनों के बीच एकजुटता, आपसी सीख और साझा एजेंडा के विकास को बढ़ावा दे। संवाद और सहयोग के लिए एक साझा मंच बनाते हुये, आईएसएफ 2023 का उद्देश्य नागरिक समाज को मजबूत करना, गठबंधन बनाना और भारत के सामने आने वाली गंभीर सामाजिक-राजनीतिक चुनौतियों का सामूहिक रूप से समाधान करना है और, वैश्विक सहयोग की अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं के प्रति साझा एकजुटता पर भी ज़ोर देना है।

इंडिया सोशल फोरम 2023 का आयोजन नेपाल के काठमांडू में आगामी वर्ल्ड सोशल फोरम (डब्ल्यू.एस.एफ) सहित वैश्विक संदर्भ में उभरती चुनौतियों और अवसरों के साथ-साथ पिछले सामाजिक मंचों से निकली शंकाओं-विषयों पर आधारित होगा। इंडिया सोशल फोरम के प्रमुख विषय इस प्रकार हैंः

1. लोकतंत्र और मानवाधिकारों की रक्षा

पिछले सामाजिक मंचों से प्रेरणा लेते हुए, इंडिया सोशल फोरम नागरिक और राजनीतिक अधिकारों की रक्षा मुख्य विषय होंगे। इसका उद्देश्य सत्तावादी शासन द्वारा उत्पन्न चुनौतियों, नागरिक समाज के लिए सिकुड़ती जगह, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के लिए खतरों और मानवाधिकार रक्षकों की सुरक्षा पर बातचीत और शासन संरचनाओं में लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं, पारदर्शिता और जवाबदेही के महत्व पर जोर देना होगा।

2. सामाजिक-आर्थिक न्याय और समानता

पिछले सामाजिक मंचों के आधार पर, इंडिया सोशल फोरम सामाजिक-आर्थिक न्याय और समानता पर ध्यान केंद्रित करना जारी रखेगा।

यह असमानता, गरीबी, भूमि, जंगल, जल और श्रम अधिकारों और शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, जल और स्वच्छता और आवास जैसी आवश्यक सेवाओं तक पहुंच के मुद्दों को संबोधित करेगा। यह विषय परिवर्तनकारी नीतियों और प्रथाओं की तत्काल आवश्यकता को पहचानता है जो समाज के सभी वर्गों के लिए समावेशी विकास और आर्थिक न्याय सुनिश्चित करते हैं।

3. हाशिए पर रहने वाले समुदायों का सशक्तिकरणः

पिछले सामाजिक मंचों के अनुसार ही सामाजिक आंदोलनों और संघर्षों से प्रेरित होकर इंडिया सोशल फोरम हाशिए पर रहने वाले समुदायों के सशक्तिकरण पर विशेष ध्यान देगा। इसमें दलितों, आदिवासियों, महिलाओं, अल्पसंख्यकों, युवाओं और अन्य हाशिए पर रहने वाले समूहों के अधिकारों और चिंताओं को संबोधित करना शामिल है। यह मंच असमानता, भेदभाव और सामाजिक-आर्थिक अन्याय के बरक्स समावेशी नीतियों, सकारात्मक कार्यों और समानता के अवसरों को बढ़ावा देने में सहायक होगा।

4. श्रमिकों के अधिकार और श्रम की गरिमा

पहले के सामाजिक मंचों से संकेत लेते हुए इंडिया सोशल फोरम श्रमिकों के अधिकारों और श्रम की गरिमा पर महत्वपूर्ण ध्यान केंद्रित करेगा। इसमें ट्रेड यूनियनों, किसान यूनियनों, अनौपचारिक श्रमिक संघों और अन्य श्रमिक आंदोलनों को मजबूत करने पर ज़ोर दिया जाएगा। यह विषय सामाजिक न्याय प्राप्त करने में श्रमिकों की महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर करते हुए उचित वेतन, सामाजिक सुरक्षा, सुरक्षित कामकाजी परिस्थितियों और श्रमिकों के अधिकारों की मान्यता और सुरक्षा जैसे मुद्दों को संबोधित करेगा।

5. पर्यावरणीय स्थिरता और जलवायु न्याय

पर्यावरणीय चुनौतियों की ज़रूरी पहल को समझते हुये इंडिया सोशल फोरम पर्यावरणीय सुरक्षा और क्लाइमेट-जस्टिस के विषय को केन्द्रित करेगा। यह सामाजिक न्याय और पर्यावरणीय मुद्दों के बीच अंतर्सम्बंध को उजागर करेगा। फोरम जलवायु परिवर्तन को संबोधित करने, सतत् विकास को बढ़ावा देने और पर्यावरणीय गिरावट से प्रभावित समुदायों के अधिकारों की रक्षा करने के लिए रणनीतियों का पता लगाएगा।

6. वैश्विक एकजुटता और सहयोग

आगामी विश्व सामाजिक मंच के अनुरूप भारत सामाजिक मंच वैश्विक एकजुटता और सहयोग के महत्व पर ज़ोर देगा। यह विभिन्न देशों के कार्यकर्ताओं, संगठनों और सामाजिक आंदोलनों के बीच संवाद, विचारों के आदान-प्रदान और नेटवर्किंग को बढ़ावा देगा। यह विषय वैश्विक चुनौतियों से निपटने और अधिक न्यायपूर्ण एवं समावेशी दुनिया को बढ़ावा देने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और सामूहिक कार्रवाई को बढ़ावा देगा।

इन विषयों के साथ-साथ, इंडिया सोशल फोरम 2023 का लक्ष्य पिछले सामाजिक मंचों से सीखे गए सबक को आगे बढ़ाना और आगामी विश्व सामाजिक मंचों की समझ और उद्देश्यों को भी आगे ले जाना है। यह संवाद, सहयोग और सामूहिक कार्रवाई के लिए उत्प्रेरक के रूप में काम करेगा, सकारात्मक परिवर्तन की ओर प्रेरित करेगा और अधिक न्यायसंगत, मज़बूत और न्यायपूर्ण समाज को बढ़ावा देगा।

5. राज्य स्तरीय सामाजिक मंच

पिछले 3-4 महीनों में राज्य-स्तरीय समूहों को संगठित करने के लिए काफ़ी काम किया जा चुका है। दिल्ली, यू.पी, बिहार, महाराष्ट्र, राजस्थान, पश्चिम बंगाल, छत्तीसगढ़, एम.पी, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु और उत्तराखंड सहित अन्य राज्यों में राज्य स्तरीय बैठकें हुई हैं। दिल्ली ने मार्च 2023 और जून 2023 में पहली भारतीय कार्य समूह की बैठक की भी मेजबानी की।

व्यापक प्रतिनिधित्व और भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए आईएसएफ 2023 पूरे भारत में कम से कम 10 राज्यों में राज्य-स्तरीय सामाजिक मंचों के आयोजन की प्रक्रिया पर आधारित होगा। ये मंच अगस्त से अक्टूबर 2023 तक आयोजित किए जाएंगे और विविध नागरिक समाज संगठनों को एक साथ आने, विचारों का आदान-प्रदान करने, एकजुटता बनाने और आगे के जन-संघर्षों के लिए साझा एजेंडा विकसित करने के लिए एक मंच प्रदान करेंगे।

6. साझा संकल्प

आई.एस.एफ 2023 के माध्यम से हम इन संकल्पों को पूरा करने की दिशा में आगे बढ़ते हैं;

1) व्यापक एकजुटता

विविध नागरिक समाज संगठनों, जमीनी स्तर के आंदोलनों और यूनियनों के बीच अनुभवों, समझ और ज्ञान के आदान-प्रदान को सुविधाजनक बनाना, एकजुटता की मजबूत भावना को बढ़ावा देना।

2) सामूहिक एजेंडा

सामूहिक एजेंडा और कार्य योजनाएं विकसित करना, जो आम संघर्षों को संबोधित करने में सहायक होगा, नागरिक समाज संगठनों को अपना प्रभाव बढ़ाने और सकारात्मक बदलाव की वकालत करने के लिए सशक्त बनाएगा।

3) जमीनी स्तर पर लामबंदी

दलितों, आदिवासियों, महिलाओं, किसानों, श्रमिकों, युवाओं और अल्पसंख्यकों सहित हाशिए पर रहने वाले समुदायों को सशक्त बनाकर ज़मीनी स्तर पर लामबंदी को मजबूत करना, यह सुनिश्चित करना कि उनकी आवाज सुनी जाए और उनके अधिकारों की रक्षा की जाए।

4) नेटवर्क निर्माणः

आईएसएफ 2023 के बाद भी निरंतर सहयोग को बढ़ावा देने के लिए नागरिक समाज संगठनों, ट्रेड यूनियनों के नेटवर्क, किसान संघ और अनौपचारिक श्रमिक संघों का विस्तार और सुदृढ़ीकरण करना ।

7. निष्कर्ष

आईएसएफ में कुछ पूर्ण सत्र केंद्रीय टीम या इंडिया वर्किंग ग्रुप द्वारा प्रस्तावित किए जा सकते हैं। लेकिन अधिकांश अन्य कार्यक्रम, सम्मेलन, कार्यशालाएं, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि विभिन्न विषयगत कार्य समूहों द्वारा प्रस्तावित आयोजित होंगे।

आई.एस.एफ 2023 विश्व सामाजिक मंच 2024 की ओर यात्रा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर दर्शाता है। सामूहिक कार्रवाई, एकजुटता और साझा एजेंडे की शक्ति का उपयोग करके, आई.एस.एफ 2023 का लक्ष्य एक जीवंत और समावेशी मंच बनाना है जो सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को मजबूत बनाए और अधिकारों को आगे बढ़ाए। हम सभी नागरिक साथ मिलकर एक सामूहिक प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाने की आशा करते हैं जो भारत के संविधान में निहित मूल्यों को कायम रखते हुए सभी के लिए न्याय, समानता और सम्मान को सुनिश्चित करेगी।

इंडिया सोशल फोरम 2023
2 – 4 दिसंबर 2023 | पटना, बिहार

रजिस्ट्रेशन वेबसाईट
https://www.wsf-india.in/

सचिवालय
इंडिया सोशल फोरम 2023

701-B, आशियाना चेंबर्स, पिलर सं. 9 के सामने, एक्सबिशन रोड, पटना, बिहार

wsf.india.2023@gmail.com | मोबाईल: 9717065181, 9631237892

वर्ल्ड सोशल फोरम – भारत

ईमेल: worldsocialforum24@gmail.com | मोबाईल: 9810418008